सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 38 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ,गुरूवार, 10 मार्च, 2022
मूल्य ₹ 3/-

अच्छा मित्र हमें तब नहीं छोड़ता जब हमें उसकी जरूरत हो जैसे, दुर्घटना पड़ गई हो, अकाल पड़ गया हो आदि...
-चाणक्य

जयंत चौधरी और राकेश टिकैत के... 8 | उत्तराखंड : प्लान बी तैयार करने जुटे... 3 | इटावा में भीषण सड़क हादसा, छह... 7

यूपी में फिर बनती दिख रही भाजपा की सरकार

रूझानों में भाजपा को बहुमत दूसरे नंबर पर सपा

गोरखपुर शहर से योगी आदित्यनाथ और करहल से अखिलेश यादव बड़ी जीत की ओर

263 सीटों पर आगे

कुल सीटें 403 बहुमत 202

दोपहर दो बजे तक के रुझान

135 सीटों पर आगे

» पश्चिमी यूपी की ज्यादातर सीटों पर भाजपा आगे, पूर्वांचल में कुछ मंत्री पिछड़े

» यूपी के रण में काफी पीछे छूटती दिख रही बसपा और कांग्रेस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इतिहास रचने की ओर योगी

उत्तर प्रदेश मतगणना के अब तक के रुझान, भाजपा की बंपर जीत की तरफ इशारा कर रहे हैं अगर ये रुझान परिणामों में तब्दील होते हैं तो भाजपा एक बार फिर यूपी में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी अगर ऐसा हुआ तो यूपी में लगातार दूसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने वाली भाजपा पहली पार्टी होगी।

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 2022 की मतगणना के रुझानों में भाजपा बहुमत के जादुई आंकड़े से काफी आगे निकलती दिख रही है। चुनाव से ठीक पहले हुए किसान आंदोलन के कारण पश्चिम यूपी में भाजपा को बड़े नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा था। हालांकि यहां रुझान इसके ठीक विपरीत दिख रहे हैं। अब तक के रुझानों में भाजपा पश्चिमी यूपी की ज्यादातर सीटों पर बढ़त बनाए हुए हैं। वहीं पूर्वांचल में भाजपा के कुछ मंत्री पीछे छूटते दिख रहे हैं। रुझानों में भाजपा की बढ़त को देखकर कार्यकर्ताओं ने अभी से जश्न मनाना शुरू कर दिया है।

यूपी विधान सभा की 403 सीटों पर मतगणना जारी है। दो बजे तक के आए रूझानों में भाजपा निर्धारित बहुमत 202 सीटों से काफी आगे चल रही है। भाजपा 263 सीटों पर बढ़त बनाए हुए है जबकि सपा 135 सीटों पर आगे चल रही है। इस चुनाव में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी की लड़की हूं लड़ सकती हूं का नारा और तमाम वादों का असर नहीं दिखा। रूझानों में वह दहाई का भी आंकड़ा पार करती नहीं दिखी। वहीं बसपा भी मुकाबले में कहीं नहीं नजर आयी। गोरखपुर शहरी सीट से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काफी बड़ी बढ़त बना ली है जबकि करहल से सपा प्रमुख अखिलेश यादव बड़ी जीत की ओर बढ़ते नजर आ रहे हैं। पूर्वांचल में भाजपा के कई मंत्री पीछे छूटते दिख रहे हैं। बलिया में उपेंद्र तिवारी और आनंद स्वरूप शुक्ला, सपा उम्मीदवारों से पीछे हैं। जौनपुर में मंत्री गिरीश यादव भी सपा उम्मीदवार से पीछे चल रहे हैं।

पंजाब में आप का जादू

चंडीगढ़। पंजाब राज्य विधान सभा की सभी 117 सीटों की मतगणना जारी है। पंजाब में पहला परिणाम भाजपा के पक्ष में आया है। पठानकोट से पंजाब भाजपा प्रधान अश्वनी शर्मा जीत गए हैं। कपूरथला में कांग्रेस के राणा गुरजीत सिंह जीत गए हैं। अब तक के रुझान में कांग्रेस 19 और आम आदमी पार्टी 91 सीटों पर आगे है। कैप्टन अमरिंदर सिंह व नवजोत सिंह सिद्धू पीछे चल रहे हैं। भाजपा 2 और शिअद 4 सीटों पर आगे हैं। 117 विधान सभा सीटों पर 20 फरवरी को मतदान हुआ था। राज्य में इस बार 71.95 प्रतिशत मतदान हुआ है। आम आदमी पार्टी को रुझानों में बहुमत मिलते ही आप के पंजाब सह प्रभारी राघव चड्ढा ने कहा कि हम आम आदमी हैं लेकिन जब आम आदमी उठता है तो सबसे शक्तिशाली सिंहासन हिलते हैं। आज भारत के इतिहास में एक छोटा दिन है, सिर्फ इसलिए नहीं कि आप एक और राज्य जीत रही है बल्कि इसलिए कि यह एक राष्ट्रीय ताकत बन गई है। आप पंजाब में कांग्रेस की जगह लेगी।

मणिपुर और गोवा में भाजपा की बढ़त

नई दिल्ली। गोवा की 40 और मणिपुर की 60 सीटों के लिए मतगणना चल रही है। गोवा में एक ही चरण में 14 फरवरी को मतदान हुए थे जबकि मणिपुर में दो चरणों में 28 फरवरी और 5 मार्च को वोटिंग हुई थी। मणिपुर में दोनों चरणों में कुल 265 उम्मीदवार मैदान में थे जबकि गोवा की 40 सीटों के लिए 301 उम्मीदवार मैदान में उतरे थे। मणिपुर और गोवा में भाजपा बहुमत के करीब जाती दिखाई दे रही है। गोवा में भाजपा ने 19 सीटों पर बढ़त बनाई हुई है। वहीं कांग्रेस उम्मीदवार 12 सीटों पर आगे चल रहे हैं। इसके अलावा अन्य दल 9 सीटों पर आगे चल रहे हैं। मणिपुर में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत मिलता दिख रहा है। भाजपा उम्मीदवार 31 सीटों पर आगे चल रहे हैं। हालांकि कांग्रेस ने सिर्फ 6 सीटों पर बढ़त बनाकर रखी है।

बाजार गुलजार, सेंसेक्स 1200 अंक उछला

नई दिल्ली। देश के पांच राज्यों में चुनाव परिणामों की प्रक्रिया के बीच सेंसेक्स भी गुलजार नजर आया और दोनों इंडेक्स जबरदस्त तेजी के साथ हरे निशान पर खुले। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 1200 अंक उछलकर खुला, वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के निफ्टी सूचकांक ने भी 300 अंकों की उछाल के साथ कारोबार शुरू किया। सेंसेक्स के सभी 30 शेयर बढ़त में कारोबार कर रहे हैं। सबसे ज्यादा तेजी बैंकिंग शेयरों में देखने को मिल रही है। 30 शेयरों में से बढ़ने वाले प्रमुख एशियन पेंट्स, हिंदुस्तान यूनिलीवर और एक्सिस बैंक प्रमुख हैं और इन सभी में चार फीसदी का उछाल आया है। इसके अलावा एसबीआई, आईसीआईसीआई बैंक, इंडसइंड बैंक, बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, मारुति और एचडीएफसी के शेयरों में तीन-तीन फीसदी की तेजी आई है। इसके विपरीत अल्ट्राटेक, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एचडीएफसी बैंक, लार्सन एंड टुब्रो, टाइटन, कोटक बैंक भी तीन फीसदी तक की बढ़त में कारोबार कर रहे हैं।

उत्तराखंड : भाजपा ने बनाई बढ़त

देहरादून। उत्तराखंड की 70 सीटों पर मतगणना जारी है। सुबह आठ बजे से शुरू हुई मतगणना जारी है। उत्तराखंड में 70 सीटों के रुझान लगातार आ रहे हैं। इसमें भाजपा आगे चल रही है। भाजपा 48 सीटों पर आगे है जबकि 18 सीटों पर कांग्रेस ने बढ़त बनाई हुई है। चार सीट पर अन्य बढ़त बनाए हुए हैं। शुरुआती रुझानों में उत्तराखंड की दो प्रमुख पार्टियों के बीच कांटे की टक्कर दिखाई दी थी, लेकिन बाद में भाजपा ने बढ़त हासिल कर ली। रुझानों में भाजपा को बहुमत मिलता दिख रहा है।

लखनऊ विधान सभा सीटों पर ये आगे

विधानसभा	भाजपा	सपा	बसपा	कांग्रेस
मलिहाबाद	जय देवी (आगे)	सुरेंद्र कुमार	जगदीश	इंद्रल कुमार
बीकेटी	योगेश शुक्ला (आगे)	गोमती यादव	सलाउद्दीन	लल्लन कुमार
सरोजनीनगर	राजेश्वर सिंह (आगे)	अभिषेक मिश्रा	जलीस खान	रूद्रदमन सिंह
लखनऊ पश्चिम	अंजनी श्रीवास्तव (आगे)	अरमान खान	कायम रजा खान	शहाना सिद्धीकी
लखनऊ उत्तर	नीरज बोरा	पूजा शुक्ला (आगे)	सरवर मलिक	अजय श्रीवास्तव
लखनऊ पूर्व	आशुतोष टंडन (आगे)	अनुराग भदौरिया	आशीष सिन्हा	मनोज तिवारी
लखनऊ मध्य	रजनीश गुप्ता	रविदास मेहरोत्रा (आगे)	आशीष चंद्र	सदफ जाफर
लखनऊ कैंट	ब्रजेश पाठक (आगे)	सुरेंद्र सिंह गांधी	अनिल पांडेय	दिलप्रीत सिंह
मोहनलालगंज	अमरेश कुमार	सुशीला सरोज (आगे)	देवेंद्र कुमार	ममता चौधरी

भावी दिशा भी तय करेंगे नतीजे

» सियासी दिग्गजों के किरदार का फैसला लगभग तय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नतीजों की जद में वे तो आएंगे ही जो चुनावी संग्राम 2022 के मैदान में हैं, लेकिन ऐसे चेहरे भी आएंगे, जो चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। चुनावी मैदान से बाहर होने के बावजूद भविष्य की लड़ाई लड़ रहे हैं। इसलिए विधानसभा चुनाव के परिणाम सिर्फ सरकार बनाने के लिए राजनीतिक दलों के भाग्य का ही फैसला नहीं करेंगे...। सिर्फ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ या पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की किस्मत का निर्णय नहीं करेंगे, बल्कि प्रियंका गांधी, जयंत चौधरी के साथ कुछ उन प्रमुख सियासी किरदारों का भी भविष्य तय करेंगे, जो चुनाव नहीं लड़ रहे हैं।

साथ ही ये नतीजा तय करेगा कि उत्तर प्रदेश की राजनीति की भावी दिशा और उसकी पटकथा क्या होगी। देर शाम तक नतीजों से पता चलेगा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव में कौन किस पर भारी पड़ा। फिलहाल तो सीएम योगी आगे है। बीते डेढ़ दशक के कालखंड में पहली बार प्रदेश का कोई मुख्यमंत्री चुनाव लड़ रहा है। साथ ही लंबे अरसे बाद इस बार यह संयोग भी घटित हो रहा है कि अखिलेश यादव के रूप में कोई पूर्व मुख्यमंत्री भी प्रदेश विधानसभा के चुनावी मैदान में उम्मीदवार है। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि व्यक्तिगत जनसमर्थन में कौन किस पर बाजी मारता है। किसके वोटों का आंकड़ा किस पर भारी पड़ता है। यह सवाल इसलिए भी अहम है, क्योंकि दोनों नेता लोकसभा का चुनाव तो लड़ते रहे हैं, लेकिन विधानसभा का पहला चुनाव लड़ रहे हैं।

जयंत चौधरी अखाड़े में जमेंगे या चुनाव में ही दिखेंगे

जयंत खुद चुनाव नहीं लड़ रहे हैं, लेकिन खासतौर से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सपा गठबंधन की चुनावी लड़ाई का नेतृत्व उन्होंने ही किया है। ऐसे में नतीजों से यह पता चलेगा कि पिता चौधरी अजित सिंह और बाबा चौधरी चरण सिंह की विरासत को सहेजने की उनमें कितनी क्षमता है। इसी के साथ उनके भविष्य का संकेत इस चुनाव के नतीजों से निकलेगा। देखना दिलचस्प होगा कि गठबंधन को बहुमत नहीं मिलने पर वे क्या भूमिका चुनेंगे। गठबंधन बरकरार रखेंगे या कुछ और फैसला करेंगे। पिता चौधरी अजित की तरह दिल्ली की ही राजनीति को तवज्जो देंगे या बाबा चौधरी चरण सिंह की तरह प्रदेश में गांव व किसानों के हितों के लिए गठबंधन के साथी अखिलेश के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश की सड़कों पर संघर्ष की राह चुनना चाहेंगे।

पता चलेगा नए चेहरों का दमखम

इन नतीजों से निकलने वाले निहितार्थों की प्रासंगिकता इसलिए और ज्यादा बढ़ गई है, क्योंकि पहली बार इस चुनाव में पूरी तरह नए नेतृत्व के दम-खम की परीक्षा का परिणाम भी सामने आने वाला है। वैसे तो समाजवादी पार्टी में बिखराव के कारण मुलायम सिंह यादव 2017 में भी चुनाव प्रचार में बहुत ज्यादा सक्रिय नहीं दिखे थे, लेकिन अखिलेश के साथ आजम खां जैसा आक्रामक वक्ता और नेता था। जो इस बार नहीं है। योगी आदित्यनाथ ने प्रचार तो तब भी किया था, लेकिन उस समय वह न मुख्यमंत्री थे और न भाजपा के चुनाव प्रचार की पूरी कमान उन्होंने संभाल रखी थी। जयंत चौधरी भले ही सांसद रह चुके हों, लेकिन यह पहला ऐसा चुनाव है जो उनके पिता रालोद नेता चौधरी अजित सिंह के निधन के बाद हुआ है। इस कारण, पहली बार रालोद की नीति-रीति और प्रचार तक का जिम्मा उनके कंधे पर रहा है।

अखिलेश का जारी रहेगा अभियान या उस पर विराम

सपा के पक्ष में परिणाम नहीं आने पर सदन के अलावा सड़क पर संघर्ष के लिए अखिलेश कैसी शैली अपनाते हैं। ब्राह्मण और अति पिछड़ों को साधने का उनका प्रयास क्या जारी रहता है? मुस्लिम वर्चस्व की राजनीति से बचने की शैली पर ही चलते रहते हैं अथवा वे मुस्लिमों के ध्रुवीकरण की नीति पर लौटने को तवज्जो देते हैं। इसी के साथ नतीजों से इस बार यह भी तय होना है कि पिता मुलायम सिंह यादव की तुलना में आम जनता में उनकी पकड़ व पहुंच कितनी है। समाजवादी पार्टी के गठन के बाद से जब तक मुलायम सिंह यादव सक्रिय रहे, सपा की जीत का आंकड़ा सिर्फ एक बार 100 से नीचे आया। तब भी 2007 में सपा को 97 सीटें मिली थीं। वर्ष 2017 में ऐसा हुआ जब सपा की सीटों की संख्या 50 से नीचे आ गई। इस बार उन्होंने पूरा चुनाव अपने दम पर लड़ा है।

नतीजों के बाद सीएम योगी की क्या रहेगी भूमिका

नतीजों के बाद नेताओं के निर्णयों से तय होगा कि प्रदेश में गठित होने जा रही 18वीं विधानसभा डेढ़ दशक से चले आ रहे किसी पूर्व मुख्यमंत्री के विपक्ष का नेता नहीं बनने का रिकॉर्ड तोड़ेगी या नहीं। यह सवाल इसलिए ज्यादा अहम हो गया है, क्योंकि 2009 के बाद विधानसभा चुनाव में यदि सत्तारूढ़ दल को बहुमत नहीं मिला, तो पूर्व मुख्यमंत्री होते ही उस नेता ने दिल्ली का रास्ता चुन लिया। इन नेताओं की तरफ से यह तर्क दिया जा सकता है कि वे विधान परिषद सदस्य थे, इसलिए विधानसभा में उनकी भूमिका नहीं थी। पर, वहां भी तो ये नेता विपक्ष के नेता की जिम्मेदारी संभालकर सरकार को घेर सकते थे। पर, ऐसा नहीं हुआ। कुछ दिन बाद किसी ने लोकसभा, तो किसी ने राज्यसभा के जरिये दिल्ली का रास्ता पकड़ लिया। ऐसे में इस बार जब वर्तमान मुख्यमंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री विधानसभा का चुनाव लड़ रहे हैं, तो यह सवाल ज्यादा प्रासंगिक हो गया है कि नतीजों के बाद कौन क्या भूमिका चुनता है। जिसकी पार्टी जीतेगी वह तो मुख्यमंत्री बनेगा, लेकिन जनता जिसके दल को विपक्ष की भूमिका सौंपती है, तो क्या वे उसे स्वीकार कर सदन में विपक्ष के नेता की भूमिका चुनेगा या किसी और को सौंपकर दिल्ली की राजनीति पसंद करेगा।

प्रियंका गांधी का प्रयास 2024 तक जारी रहेगा

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वैसे तो उत्तर प्रदेश के लिए नई नहीं हैं। वह पहले भी कांग्रेस उम्मीदवारों के प्रचार के लिए आती रही हैं। पर पहली बार उन्होंने उत्तर प्रदेश का कोई चुनाव पूरी तरह अपने कंधों पर ढोया है। उन्होंने न सिर्फ कांग्रेस के चुनाव प्रचार की रणनीति बनाई, बल्कि एक तरह से व्यावहारिक रूप से कांग्रेस की एक मात्र स्टार प्रचारक रहीं। प्रचार के साथ प्रत्याशियों के चयन के साथ वह मुद्दे चुनने से लेकर चुनावी रणनीति के लिहाज से सभी कामों को 'वन मैन आर्मी' की तरह किया। वह चाहे प्रत्याशियों में महिलाओं को 40 प्रतिशत हिस्सेदारी देने के वादे का मामला हो अथवा चुनाव घोषणापत्रों को अलग-अलग वर्गों पर केंद्रित कर नई शैली का प्रयोग...। वह चुनाव तो नहीं लड़ रही हैं, लेकिन उन्होंने कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में निष्क्रियता के भंवर से निकालने की कोशिश जरूर की है। ऐसे में इस चुनाव का नतीजा कांग्रेस के कद के साथ प्रियंका की भूमिका भी तय करेगा। अगर वह कांग्रेस को कुछ अतिरिक्त सीटें दिलाने या पार्टी का वोट प्रतिशत बढ़ाने में कामयाब रहीं, तो उन्हें सफल माना जाएगा। साथ ही यह भी स्वीकार करना होगा कि प्रियंका में मृतप्राय पड़ी कांग्रेस को जीवनदान देने की क्षमता है। अब ऐसा नहीं होता है तो न सिर्फ कांग्रेस की चुनौतियां और बढ़ेंगी, बल्कि प्रियंका की क्षमता पर भी सवाल उठेंगे। इन नतीजों के बाद यह भी पता चलेगा कि प्रियंका अपनी आगे की भूमिका क्या तय करती हैं। वह लखनऊ में रुककर प्रदेश में कांग्रेस के मिशन पुनर्जीवन को आगे बढ़ाएंगी या पस्त हो लौट जाती हैं।

स्वतंत्र देव संगठन पर ही देंगे ध्यान

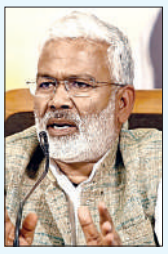

सत्तारूढ़ दल के अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह भी चुनाव तो नहीं लड़ रहे हैं, लेकिन आने वाले नतीजों से उनके भविष्य का भी नतीजा जुड़ा हुआ दिख रहा है। बतौर संगठन मुखिया वह चुनाव मैदान में उतरी भाजपा की टीम के कप्तान हैं। इसलिए टीम की जीत या हार का असर उन पर पड़ना तय है। बस देखना यह है कि नतीजों के बाद भी उन्हें संगठन पर ही ध्यान केंद्रित रखने का काम मिलता है या कोई दूसरी भूमिका सौंपी जाती है। फिलहाल तो उनकी जिम्मेदारी बढ़ेगी।

डॉ. दिनेश शर्मा की बदलेगी भूमिका

उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा भी चुनाव नहीं लड़ रहे हैं, लेकिन उनके लिए भी इस चुनाव के नतीजे अहम हैं। पार्टी के परिणामों से वह भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे। इसलिए उनके लिए जो सबसे ज्यादा अहम बात है, वह यह है कि नतीजे आने के बाद उनकी क्या भूमिका रहती है। सब कुछ जस का तस रहता है या उसमें बदलाव होता है। बदलाव होता है तो वे कहां और किस भूमिका में काम करते हुए दिखेंगे।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

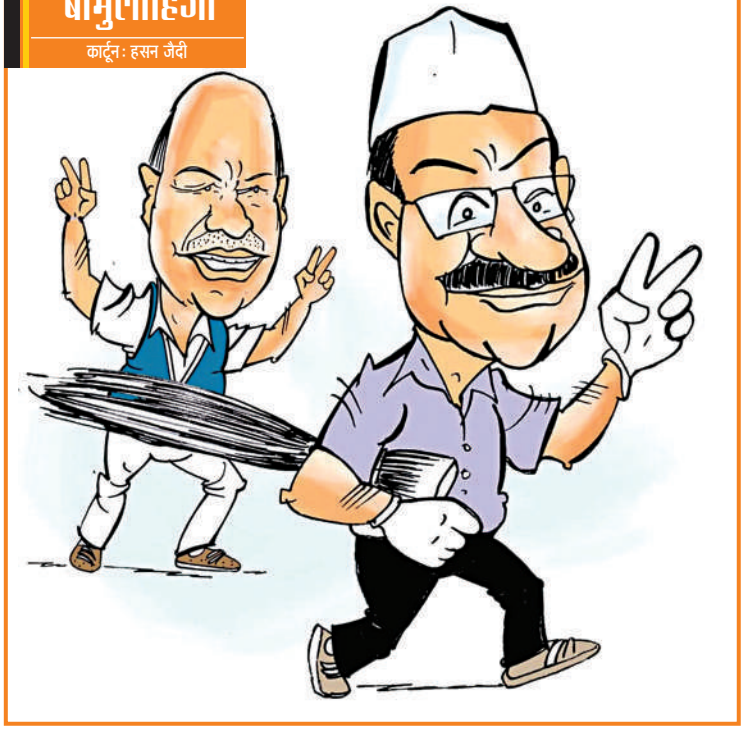

नोएडा का मिथक टूटा, योगी इतिहास रचने की ओर

» भाजपा के साथ मुख्यमंत्री भी बनाएंगे इतिहास

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के शुरुआती रुझानों में भारतीय जनता पार्टी सबसे आगे चल रही है। रुझानों के साथ ही एग्जिट पोल्स पर मुहर लगती दिख रही है। इसी मुहर के साथ उत्तर प्रदेश के कुछ ऐसे पॉलिटिकल किस्से भी हैं, जिन पर अब फुल स्टॉप लग जाएगा, यानी कुछ नए रिकॉर्ड बन जाएंगे। साथ ही भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश में नया इतिहास भी रच देंगे।

उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक मिथक हमेशा से चर्चा में रहा है कि जो भी मुख्यमंत्री अपने कार्यकाल के दौरान नोएडा जाता है, उसकी कुर्सी अगले चुनाव में चली जाती है। नोएडा से जुड़े इस अंधविश्वास का खौफ नेताओं में इतना अधिक रहा है कि अखिलेश यादव बतौर मुख्यमंत्री एक बार भी नोएडा नहीं आए। उनसे पहले मुलायम सिंह यादव, एनडी तिवारी, कल्याण सिंह, और राजनाथ सिंह जैसे नेताओं ने भी नोएडा से दूरी बनाए रखी। 2007 से 2012 के बीच मायावती ने इस मिथक को तोड़ने की और दो बार नोएडा गईं लेकिन 2012 में उनकी सरकार गिर जाने के बाद नोएडा का ये मिथक फिर चर्चा में आ गया। वहीं दूसरी ओर योगी आदित्यनाथ अपने कार्यकाल के दौरान कई बार नोएडा गए। ऐसे में अब ये मिथक भी टूटता दिख रहा है।

योगी आदित्यनाथ के काम को जनता ने सराहा

आजादी के बाद से अब तक कोई भी मुख्यमंत्री पांच साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद अगले चुनावी नतीजों के बाद मुख्यमंत्री नहीं बन पाया। अगर योगी सरकार वापसी करती है तो योगी आदित्यनाथ यह रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लेंगे। जीत की ओर बढ़ती भाजपा ने पूरा चुनाव योगी आदित्यनाथ के काम पर लड़ा है। अगर योगी दोबारा मुख्यमंत्री बनते हैं तो 15 साल के बाद कोई विधायक मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठेगा। 2007 में मायावती, 2012 में अखिलेश यादव और फिर 2017 में योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री बने। तीनों विधान परिषद के रास्ते ही मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज हुए।

उत्तराखंड : प्लान बी तैयार करने में जुटे भाजपा-कांग्रेस के रणनीतिकार

खंडित जनादेश से आशंकित अन्य दलों को साधने में जुटे

» निर्दलीयों पर भी नजर, भाजपा भी व्यूह रचना बनाने में जुटी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। उत्तराखंड में मतगणना पर नजर रखने के साथ भाजपा और कांग्रेस ने प्लान बी पर भी काम करना शुरू कर दिया है। दोनों दलों के रणनीतिकार खंडित जनादेश की स्थिति से निपटने पर मंथन कर रहे हैं। बुधवार को कांग्रेस मुख्यालय भवन में देहरादून के सभी प्रत्याशियों के साथ पर्यवेक्षक मोहन प्रकाश जोशी बंद कमरे में बैठक की वहीं भाजपा के चुनाव प्रभारी प्रह्लाद जोशी, वरिष्ठ नेता कैलाश विजयवर्गीय, पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक सहित तमाम दिग्गज नेताओं के बैठकों का दौर जारी है।

नेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में कांग्रेस पर्यवेक्षक मोहन प्रकाश व एम.बी. पाटिल द्वारा जिला देहरादून के सभी प्रत्याशीगणों, जिला व महानगर अध्यक्षगणों की मतगणना को लेकर आहूत महत्वपूर्ण बैठक में शिरकत की। सभी की निगाहें आज होने वाली मतगणना पर टिकी हैं। मतगणना के लिए चुनाव आयोग के साथ राजनीतिक पार्टियों ने भी तैयारी तेज कर दी है। यहां मुख्य मुकाबला भाजपा-कांग्रेस के बीच है।

हालांकि दोनों ही पार्टियां बहुमत के साथ सरकार बनाने का दावा कर रही हैं लेकिन भीतरखाने दोनों ही पार्टियां बहुमत को लेकर आशंकित भी हैं। ऐसे में दूसरे विकल्पों की रणनीति को भी धार देने का काम किया जा रहा है। कांग्रेस भाजपा की रणनीति की काट के साथ तमाम दूसरे विकल्पों पर विचार करते हुए आगे बढ़ रही है। खंडित जनादेश आने पर कांग्रेस पार्टी अन्य लोकतांत्रिक दलों के साथ निर्दलियों को साध सकती है।

पार्टी सूत्रों की मानें तो इस मिशन पर पार्टी के वरिष्ठ नेता पहले से काम कर रहे हैं। इससे पहले हरीश रावत का बयान भी सामने आ चुका है, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह सभी लोकतांत्रिक दलों का सहयोग लेना चाहेंगे। प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने भी इस बात के संकेत दिए थे कि पार्टी अन्य दलों और निर्दलियों के संपर्क में है। बहुमत की स्थिति आने पर भी पार्टी सबको साथ लेकर आगे बढ़ना चाहेगी।

विधायकों की खरीद-फरोख्त का डर

उत्तराखंड विधान सभा चुनाव में किसी भी पार्टी को बहुमत न मिलने की स्थिति में जोड़तोड़ की चर्चाओं के बीच कांग्रेस सतर्क हो गई है। गोवा चुनाव से सबक लेते हुए पार्टी मतगणना के तुरंत बाद अपने विधायकों को कांग्रेस शासित राज्यों राजस्थान या छत्तीसगढ़ में शिफ्ट कर सकती है। गोवा में हुए विधान सभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के बावजूद कांग्रेस वहां अपनी सरकार बनाने में विफल रही थी। ऐसे में इस बार पार्टी कोई रिस्क नहीं लेना चाहती है। देहरादून के एक होटल में कांग्रेस का वार रूम सक्रिय हो गया है। सूत्रों के मुताबिक पार्टी खंडित जनादेश को लेकर भी घबराई हुई है। चुनाव नतीजे आने के बाद जीते हुए विधायक पर्यवेक्षक की सुरक्षा में रहेंगे। सूत्रों के अनुसार जीते हुए विधायकों को कांग्रेस शासित दूसरे राज्यों में शिफ्ट किया जा सकता है। हालांकि कांग्रेस चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष हरीश रावत ने कहा कि उत्तराखंड में इस बार जनादेश भाजपा के खिलाफ है इसलिए भाजपा प्लान बी, प्लान सी की बात कर रही है। हमें ऐसा कुछ सोचने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाएंगे।

विधान परिषद चुनाव की तैयारियों में जुट गई भाजपा, सपा में सेंध लगाने की तैयारी

» चुनाव से पहले कुछ एमएलसी भाजपा में हो सकते हैं शामिल

» 35 सीटों के चुनाव के लिए 15 मार्च को जारी होगी अधिसूचना

» 22 मार्च तक नामांकन और 9 अप्रैल को होगा मतदान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधान परिषद की स्थानीय निकाय क्षेत्र की 35 सीटों के चुनाव के लिए भाजपा ने सपा में सेंध लगाने की तैयारी की है। स्थानीय निकाय क्षेत्र से सपा के कुछ और एमएलसी आगामी दिनों में सपा छोड़कर भाजपा में शामिल हो सकते हैं। विधान सभा चुनाव के नतीजों के बाद तोड़फोड़ का सिलसिला शुरू होगा। विधान परिषद की 35 सीटों के चुनाव के लिए 15 मार्च को अधिसूचना जारी होगी। 22 मार्च तक नामांकन दाखिल किए जाएंगे और 9 अप्रैल को मतदान होगा।

भाजपा ने एमएलसी चुनाव के लिए

करीब तीन महीने पहले से तैयारी शुरू कर दी थी। इसके लिए पार्टी ने सपा के स्थानीय निकाय क्षेत्र के मौजूदा सपा एमएलसी सीपी चंद, रविशंकर सिंह पप्पू, घनश्याम सिंह लोधी, नरेंद्र सिंह भाटी, रमेश मिश्र, रमा निरंजन, शैलेंद्र प्रताप सिंह और जसवंत सिंह को भाजपा की सदस्यता ग्रहण कराई। वहीं कांग्रेस के एमएलसी दिनेश प्रताप सिंह और निर्दलीय विशाल सिंह चंचल पहले ही भाजपा में शामिल हो चुके है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक 35 में से 10 सीटों पर सपा और कांग्रेस से आए मौजूदा परिषद सदस्यों को फिर टिकट देना तय है जबकि शेष 25 सीटों पर प्रत्याशी चयन के लिए पार्टी ने मशक्कत शुरू कर दी है। सपा खेमे में बचे स्थानीय निकाय क्षेत्र के अधिकांश सदस्यों में यादव और मुस्लिम है। भाजपा के नेताओं ने यादव सदस्यों को तोड़ने का प्रयास शुरू किया है। 10 मार्च को विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद तय होगा कि भाजपा का प्रयास रंग लाएगा या नहीं।

विधान परिषद में सौ सीटें, भाजपा के लिए जीत जरूरी

विधान परिषद में सौ सीटें हैं। विधान परिषद की 35 सीटें राजनीतिक दलों का गणित बदल देती हैं। वर्ष 2016 के चुनाव में समाजवादी पार्टी की 31 सीटें आईं थीं। दो सीटों पर पर बसपा जीती थी। रायबरेली से कांग्रेस के दिनेश प्रताप सिंह जीते थे। बनारस से बृजेश कुमार सिंह व गाजीपुर से विशाल सिंह चंचल चुने गए थे। दिनेश प्रताप सिंह बाद में भाजपा में शामिल हो गए। विधान परिषद चुनाव वर्तमान सरकार और भाजपा संगठन के लिए महत्वपूर्ण चुनाव है। भाजपा अधिक सीटें जीतकर विधान परिषद में बहुमत हासिल करना चाहेगी जबकि सपा अपनी सीटें बचाने में जुटेगी।

सात चरणों में हो चुका विधान सभा चुनाव

विधान परिषद का चुनाव पहले मार्च माह के शुरूआत से ही था। पहले चार मार्च से चुनाव होने थे। मगर यूपी विधान सभा चुनाव के चलते इसकी तिथियों में बदलाव किया गया। अब 15 मार्च को अधिसूचना जारी होगी। इससे पहले उत्तर प्रदेश में सात चरणों में मतदान हुआ। 10 फरवरी को 58 सीटों पर पहले चरण का मतदान हुआ। दूसरे चरण का मतदान 14 फरवरी को 55 सीटों पर। तीसरे चरण का मतदान 20 फरवरी को 59 सीटों पर, 23 फरवरी को चौथे चरण का मतदान 60 सीटों पर, पांचवें चरण का मतदान 27 फरवरी को 60 सीटों पर, छठे चरण का मतदान 57 सीटों पर तीन मार्च को और सातवें चरण का मतदान 54 सीटों पर 7 मार्च को संपन्न हो गया। आज यानी दस मार्च की देर शाम तक परिणाम आ जाएगा कि किसकी सरकार बनेगी। फिलहाल खबर लिखे जाने तक रुझानों में भाजपा बढ़त बनाए हुए थी।

20 सीटों पर कैडर को चुनाव लड़ाने की तैयारी

सूत्रों के मुताबिक करीब 20 सीटों पर पार्टी अपने ऐसे कार्यकर्ताओं को मौका देगी, जिन्हें विधान सभा चुनाव में टिकट नहीं मिल सका है। पार्टी के लोगों का मानना है कि प्रदेश में भाजपा की दोबारा सरकार बनने पर कैडर के कार्यकर्ताओं को चुनाव जिताने में ज्यादा परेशानी नहीं होगी। इनमें कुछ पार्टी पदाधिकारियों को भी मौका दिया जा सकता है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

जनता की सेहत से खिलवाड़ कब तक?

“ त्योहारी सीजन में उत्तर प्रदेश में मिलावटी वस्तुओं का बाजार एक बार फिर गर्म हो गया है। बाजार में खाद्य पदार्थों समेत तमाम मिलावटी वस्तुएं धड़ल्ले से बेची जा रही हैं। मोटा मुनाफा कमाने के लिए मिलावटखोर लोगों की सेहत से खिलवाड़ कर रहे हैं। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से लोग विभिन्न रोगों के शिकार हो रहे हैं। वहीं इस पर अंकुश लगाने के लिए संबंधित विभाग गंभीर नहीं दिख रहा है।

त्योहारी सीजन में उत्तर प्रदेश में मिलावटी वस्तुओं का बाजार एक बार फिर गर्म हो गया है। बाजार में खाद्य पदार्थों समेत तमाम मिलावटी वस्तुएं धड़ल्ले से बेची जा रही हैं। मोटा मुनाफा कमाने के लिए मिलावटखोर लोगों की सेहत से खिलवाड़ कर रहे हैं। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से लोग विभिन्न रोगों के शिकार हो रहे हैं। वहीं इस पर अंकुश लगाने के लिए संबंधित विभाग गंभीर नहीं दिख रहा है। सवाल यह है कि कड़े कानूनी प्रावधानों के बावजूद मिलावटखोरों के हौसले बुलंद क्यों हैं? क्या मिलावटखोरों, दुकानदारों और कर्मियों की मिलीभगत से यह धंधा चल रहा है? खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग क्या कर रहा है? महज त्योहारों के समय ही खाद्य वस्तुओं के नमूने की जांच क्यों होती है? क्या त्योहारों के समय ही बाजार में मिलावटी वस्तुएं बिकती हैं? क्या सरकार लोगों की सेहत को लेकर गंभीर नहीं है? क्या लचर और भ्रष्ट तंत्र का फायदा मिलावटखोर उठा रहे हैं?

उत्तर प्रदेश में मिलावट का धंधा खूब फलफूल रहा है। मिलावटखोर खाद्य तेल, मसाले, मावा, घी समेत तमाम खाद्य पदार्थों में मिलावट कर बाजार में बेच रहे हैं। मसालों में घातक केमिकल रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। प्रदेश की राजधानी लखनऊ तक में यह धंधा बदस्तूर जारी है और यहां के नामी संस्थान भी मिलावट करने में पीछे नहीं हैं। पिछले साल मिठाइयों में मिलावट को लेकर कुछ नामी संस्थानों के नाम भी सामने आए थे। मिलावट के सामान को बाजार में खपाने के लिए पूरा नेटवर्क है। सामान में मिलावट करने से लेकर उसे बाजार में पहुंचाने तक की पूरी व्यवस्था की गयी है। इसमें दुकानदारों की भी मिलीभगत रहती है। वे मोटे मुनाफे के चक्कर में मिलावटी वस्तुओं को उपभोक्ताओं को बेच देते हैं। यह स्थिति तब है जब मिलावटखोरी को रोकने के लिए खाद्य सुरक्षा और औषधि प्रशासन विभाग के पास भारी भरकम अमला है। बावजूद इसके विभाग केवल त्योहारों के समय सक्रिय होती है और कुछ नमूनों को जांच के लिए भरकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेता है। जब तक नमूनों की जांच रिपोर्ट आती है सारा मिलावटी सामान बाजार में खप जाता है। यही नहीं टीम मिलावटखोरों को अदालत के दरवाजे तक पहुंचाने में वर्षों लगा देती है लिहाजा हालात बदतर बने हुए हैं। वहीं चिकित्सकों का कहना है कि मिलावटी वस्तुओं के सेवन से पाचन समेत शरीर के कई अंगों पर प्रभाव पड़ता है। यदि सरकार मिलावटखोरी पर अंकुश लगाना चाहती है तो उसे न केवल नियमित जांच पर फोकस करना होगा बल्कि मिलावटखोरों के खिलाफ कठोर कार्रवाई भी सुनिश्चित करनी होगी।

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

पूंजी का पलायन रोकने के हों प्रयास

भरत झुनझुनवाला

रिजर्व बैंक की कमेटी ने संस्तुति की है कि देश को पूंजी के मुक्त आवागमन की छूट देनी चाहिए यानी विदेशी निवेशक भारत में स्वच्छंदता से आ सकें और भारतीय निवेशक अपनी पूंजी को स्वच्छंदता से भारत से बाहर निवेश कर सकें, ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिए। कमेटी का कहना है इसके चार लाभ हैं। पहला देश में पूंजी की उपलब्धि बढ़ जाएगी। यह सही है कि विदेशी पूंजी का भारत में आना सरल हो जाएगा। जो विदेशी निवेशक भारत में निवेश करेंगे उनके लिए समय क्रम में अपनी पूंजी को निकाल कर अपने देश वापस ले जाना आसान हो जाएगा। लेकिन यह दोधारी तलवार है। यदि विदेशी निवेशकों के लिए भारत में पूंजी लाना आसान हो जाएगा तो उसी प्रकार भारतीयों के लिए भी अपनी पूंजी को बाहर ले जाना आसान हो जाएगा। रिजर्व बैंक के ही आंकड़े बताते हैं कि पिछले तीन वर्षों में हमारा पूंजी खाता ऋणात्मक रहा है यानी जितनी विदेशी पूंजी अपने देश में आई है उससे ज्यादा पूंजी अपने देश से बाहर गई है।

कमेटी का दूसरा कथन है कि पूंजी के मुक्त आवागमन से अपने देश में पूंजी की लागत कम हो जाएगी और ब्याज दर कम हो जाएगी। लेकिन रिजर्व बैंक के ही आंकड़े इसी के विपरीत खड़े हैं जो बता रहे हैं हमारा पूंजी खाता ऋणात्मक है यानी पूंजी बाहर जा रही है और जिसके कारण अपने देश में पूंजी का मूल्य बढ़ रहा है, घट नहीं रहा है। कमेटी ने तीसरा तर्क दिया है कि पूंजी के मुक्त आवागमन से भारतीय कंपनियों द्वारा लिए जाने वाले लोन का विविधीकरण हो जाएगा। जैसे किसी कंपनी को यदि फैक्टरी लगानी हो तो कुछ पूंजी वह भारतीय बैंक से लेंगे, कुछ विदेशी बैंक से लेंगे, कुछ विदेशी निवेशकों से लेंगे। इस प्रकार उनके ऊपर जो लोन का भार है वह किसी एक स्रोत पर निर्भर होने के स्थान पर विविध स्रोतों पर बंट जाएगा और ज्यादा टिकाऊ होगा। कई कंपनियों ने हाल में विदेशी पूंजी का लोन लिया भी है। लेकिन जितना इन्होंने लिया है उससे ज्यादा बाहर भी गया है इसलिए यह विविधीकरण कंपनियों के लिए लाभप्रद रहा हो सकता है लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था को लाभ हुआ हो, ऐसा नहीं दिखता है। कमेटी के अनुसार चौथा लाभ भारतीय निवेशकों के लिए निवेश का विविधीकरण है। भारतीय निवेशक विदेशी प्रॉपर्टी एवं शेयर बाजार के साथ-साथ भारतीय प्रॉपर्टी एवं शेयर बाजार में निवेश कर सकेंगे लेकिन पुन: यह लाभ निवेशक विशेष को होगा। यह देश का लाभ नहीं है क्योंकि

जब भारतीय निवेशक अपनी पूंजी को विदेशों में निवेश करते हैं तो भारत की पूंजी बाहर जाती है और भारत की अर्थव्यवस्था कमजोर होती है। इस दृष्टि से कमेटी के दिए गए तर्क मान्य नहीं हैं। विशेष बात यह है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने कहा है कि आपदा के समय विकासशील देशों को पूंजी के मुक्त आवागमन पर रोक लगानी चाहिए। उन्होंने कोरिया और पेरू द्वारा कोविड संकट के दौरान ऐसे प्रतिबंध लगाने का स्वागत किया है। हमें भी इस दिशा पर विचार करना चाहिए। वर्तमान में हमारे सामने एक और संकट है कि अभी तक अमेरिकी फेडरल रिजर्व बोर्ड ने ब्याज दर शून्य के लगभग कर रखी थी। निवेशकों के लिए लाभप्रद था कि अमेरिका में लोन लेते और भारत में निवेश करते लेकिन अब फेडरल रिजर्व बोर्ड ने संकेत दिए हैं कि वे शीघ्र ही ब्याज दरों में वृद्धि करेंगे। यदि ऐसा होता है तो निवेशकों के लिए अपनी पूंजी को भारत से निकालकर अमेरिका ले जाना ज्यादा लाभप्रद हो जाएगा क्योंकि अमेरिका में निवेश को ज्यादा स्थाई और टिकाऊ माना जाता है इसलिए हमको विचार करना चाहिए कि आखिर हमारी देश से पूंजी का पलायन हो क्यों रहा है। जर्नल ऑफ इंडियन एसोसिएशन ऑफ सोशल साइंस इंस्टिट्यूशन में छपे एक पर्चे के अनुसार, भारत से पूंजी के पलायन के कई कारण हैं। पहला कारण भ्रष्टाचार का है। इसलिए सरकार को नीचे से भ्रष्टाचार को दूर करने के कदम उठाने चाहिए। दूसरा सरकारी ऋण ज्यादा होने से निवेशकों को भय होता है कि ऋण की भरपाई करने के लिए आने वाले समय में रिजर्व बैंक नोटों को ज्यादा मात्रा में छापेगा, जिससे देश में महंगाई बढ़ेगी और भारतीय रुपये का अवमूल्यन होगा। तब उनकी पूंजी का मूल्य स्वत: घट जाएगा इसलिए सरकारी ऋण की अधिकता से पूंजी का पलायन होता है। इस परिस्थिति में भारत सरकार को ऋण कम लेना चाहिए लेकिन इससे निवेश में कमी नहीं होनी चाहिए अन्यथा पुन: आर्थिक विकास की गति में ठहराव आएगा। तीसरा मुक्त व्यापार को अपनाने से भी पूंजी का पलायन होता है। इसका कारण यह दिखता है कि जब हम मुक्त व्यापार को अपनाते हैं तो उद्यमियों के लिए आसान हो जाता है कि अपनी पूंजी को उस देश में ले जाएं जहां पर उत्पादन सुलभ हो। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह भ्रष्टाचार पर रोक लगाए, सरकारी खपत को घटाए और मुक्त व्यापार को अपनाने के स्थान पर आयात कर बढ़ाये।

भारत में मेडिकल शिक्षा की मुश्किलें

प्रभु चावला

जब युद्धग्रस्त यूक्रेन में भारतीय मेडिकल छात्र भटक रहे थे, तब केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कह दिया कि विदेश जानेवाले भारतीय छात्रों में 60 प्रतिशत चीन, रूस और यूक्रेन जाते हैं क्योंकि वहां पढ़ाई सस्ती है। चुनाव के समय नुकसान की भरपाई के लिए केंद्र सरकार ने अभूतपूर्व अभियान ऑपरेशन गंगा की शुरुआत की। हालांकि जोशी सच कह रहे थे। यह बीमारी उनके राज्य कर्नाटक में सत्तर के दशक में शुरू हुई, जहां कैपिटेशन फीस के बहाने मेडिकल कॉलेजों में धन बनाने का सिलसिला चला।

आज हमारे पास हर डेढ़ हजार नागरिक के लिए एक डॉक्टर है, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुसार प्रति हजार लोगों के लिए एक डॉक्टर होना चाहिए। यह कमी सीधे तौर पर चिकित्साकर्मियों की मांग और आपूर्ति में बढ़ती खाई से जुड़ी है। मेडिकल कॉलेजों की कमी और शुल्क संरचना में विविधता से दाखिले में बड़ी गड़बड़ होती रही है। भारत उन देशों में है जहां आबादी और सीटों की उपलब्धता का अनुपात बहुत खराब है और यह पूरे तंत्र में भ्रष्टाचार की सबसे बड़ी वजह है। पिछले साल लगभग 600 निजी व सरकारी मेडिकल संस्थानों में एमबीबीएस की केवल 90 हजार सीटें थीं। डेंटल सर्जरी में स्नातक के लिए अतिरिक्त 28 हजार सीटें थीं। इन 1.10 लाख सीटों के लिए 16 लाख से अधिक छात्र नीट के लिए पंजीकृत हुए थे। हालांकि अब प्रवेश केंद्रीकृत प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा होता है पर कुछ राज्यों की शिकायत है कि परीक्षा प्रणाली क्षेत्रीय भाषाओं और आकांक्षाओं के लिए अन्यायपूर्ण है। वोट के भूगोल, भाषाई हिसाब और विचारधारात्मक निर्देशों को लेकर व्यस्त भारत के नीति-निर्धारकों ने कभी भी स्वास्थ्य शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी। ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे अस्पताल नहीं हैं। विश्वस्तरीय संस्थान बड़े शहरों या विकसित राज्यों तक सीमित हैं। एक तिहाई मेडिकल सीटें पांच दक्षिणी राज्यों, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में है। कर्नाटक में 9500 से अधिक सीटें हैं। महाराष्ट्र और गुजरात में 15 हजार सीटें हैं।

उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों, जहां देश की लगभग आधी आबादी रहती है, में लगभग 20 हजार सीटें ही हैं। बीस करोड़ की आबादी वाले उत्तर प्रदेश में मात्र 7500 सीटें हैं। पश्चिम बंगाल में यह संख्या करीब 5000 है। हमारे मेडिकल कॉलेज देशभर के अस्पतालों को समुचित संख्या में स्वास्थ्यकर्मी मुहैया नहीं करा सकते। भारत में अभी 12 लाख से अधिक बिस्तरों वाले 70 हजार छोटे-बड़े अस्पताल हैं, जिनमें अधिकतर के पास नियमित उपचार के लिए पर्याप्त डॉक्टर नहीं हैं। केवल सीटों की कमी के कारण ही छात्रों को बाहर नहीं जाना पड़ता है। प्रवेश प्रणाली की बेहद खराब संरचना, जिसमें जातिगत आरक्षण भी है, ने छात्रों को बाहर जाने पर मजबूर किया है। हालांकि शुल्क संरचना को लेकर हमारे देश में नियमन है, फिर भी बांग्लादेश, यूक्रेन, रोमानिया, पोलैंड, चीन और रूस की तुलना में यह बहुत अधिक है। ये देश भारतीय छात्रों के लिए 20 हजार से अधिक सीटें मुहैया कराते हैं। भारत के निजी संस्थानों की तुलना में उनकी सालाना फीस एक तिहाई है। साथ ही, वहां छात्रों को बेहतर सुविधाएं मिलती हैं। नौकरशाही एक बढ़ता हुआ घाव है। बाहर से पढ़ कर आनेवाले छात्रों को डॉक्टर के रूप में प्रैक्टिस करने के लिए यहां एक परीक्षा पास करनी होती है। अकादमिक प्रवेश के लिए हर चरण में शर्तें व बाधाएं खड़ी करने में भारत को महारत हासिल है, जिसका फायदा मेडिकल माफिया उठाता है। नये कॉलेज बनाने के लिए मंजूरी लेने के सिस्टम ने स्वास्थ्य मंत्रालय के बाबुओं या मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया को अपार शक्ति दे दी है, जो अच्छे आवेदनों को भी बर्बाद कर देते हैं। अस्सी के दशक में बिना डॉक्टरों के ही कुछ मेडिकल कॉलेज खोले गये थे। जब जांच होती थी तब धूर्त संचालक दूसरे संस्थानों से मेडिकल स्टाफ और उपकरण लाकर रख देते थे। दूसरी ओर, मेडिकल काउंसिल एवं अन्य एजेंसियों ने नये कॉलेज बनाने के लिए अव्यावहारिक और खर्चीले निर्देश बना दिये हैं, जिनके तहत एक एमबीबीएस संस्थान बनाने में 180 करोड़ रुपये से अधिक लागत आती है। स्वाभाविक रूप से एक निजी उद्यमी अपनी लागत छात्रों से वसूलना चाहेगा।

स्थिति ऐसी बदहाल है कि एक भारतीय मेडिकल कॉलेज 133 ग्रेजुएट ही पैदा कर सकता है। यह आंकड़ा पश्चिमी यूरोप में 150, पूर्वी यूरोप में 225 और चीन में 930 तक है। घातक भारतीय नौकरशाही ने स्वास्थ्य सेवा में कृत्रिम कमी पैदा की है। सीट बढ़ाने की बजाय उन्होंने संस्थानों को फीस बढ़ाने की अनुमति दी। बाहर पढ़ रहे छात्रों पर भारत 70 हजार करोड़ रुपये सालाना खर्च करता है। प्रधानमंत्री ने गलत नहीं कहा है कि छोटे देशों में पढ़ने जा रहे हमारे बच्चों की मजबूरी के लिए पिछली सरकारों की विफलता जिम्मेदार है। उन्होंने कहा, '2014 में हमारे देश में 387 मेडिकल कॉलेज थे. बीते सात सालों में यह संख्या 596 हो गयी है। यह 54 प्रतिशत की वृद्धि है। 2014 से पहले केवल सात एम्स थे, अब मंजूर किये गये एम्स की संख्या 22 हो चुकी है। समय है कि कठोर कदम उठाते हुए ठोस प्रक्रिया अपनायी जाए ताकि शक्तिशाली स्वस्थ, स्वच्छ, आत्मनिर्भर और संपन्न भारत बनाने के लिए कल के चिकित्सक पैदा किये जा सकें।

गैस की समस्या से अधिकतर लोग परेशान रहते हैं। कई बार उल्टा-सीधा, अधिक तेल-मसालेदार चीजों के सेवन से गैस, पेट में जलन, मरोड़ की समस्या परेशान करने लगती है। गैस के कारण पेट में दर्द, पेट फूलना, आलस, सुस्ती, पेट में जलन, मतली महसूस होने के लक्षण नजर आ सकते हैं। जिन लोगों को गैस की समस्या बराबर बनी रहती है, उन्हें अपने खानपान का खास ख्याल रखना चाहिए। कई चीजें होती हैं, जो गैस का कारण बनती हैं। कभी भी कुछ भी खाने से बचने की कोशिश करनी चाहिए। गैस तब होता है, जब कोई भी भोजन आसानी से आंतों में पचता नहीं है।

एसिडिटी की समस्या से निजात दिलायें घरेलू नुस्खे

गैस तब बनती है, जब कोई भी भोजन आसानी से आंतों में पचता नहीं है।

कई बार बहुत ज्यादा खा लेना। खाली पेट में चाय पीना, अधिक देर तक भूखे रहना, अधिक मसालेदार चीजों का सेवन करने से भी गैस बनती है

केला

क्लिनिकल न्यूट्रिशनिस्ट अंशुल जयभारत ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एसिडिट दूर करने के लिए कुछ टिप्स शेयर किए हैं। उन्होंने गैस की समस्या को दूर करने के लिए केला खाने की सलाह दी है। केला सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। यह पेट को दुरुस्त रखता है। केले में क्षारीय प्रकृति मौजूद होती है, जो भोजन नली की परत को शांत करने में मदद करती है। इससे एसिड रिफ्लक्स और पेट में होने वाली जलन की समस्या भी दूर होती है। केले का सेवन आप नाश्ते करने से पहले और दोपहर के मध्य में कर सकते हैं।

सौंफ का पानी

यदि आपको गैस, अपच की समस्या परेशान कर रही है, तो आप सौंफ का पानी पिएं। सौंफ में मौजूद वाष्पशील तेल एसिडिटी को कम करने में मदद करता है। सौंफ का पानी बनाने के लिए एक चम्मच सौंफ लें। इसे एक गिलास पानी में 2 से 3 मिनट तक उबालें। सुबह सबसे पहले इस पानी को गर्म पिएं ।

गुलकंद मिल्क

यह गुलाब की पंखुड़ियों से बनता है। गुलकंद मिल्क को पीने से गैस की समस्या दूर होती है। यह स्वाद और सेहत दोनों में ही बेहद अच्छा होता है। ठंडा गाय का दूध लें। इसमें गुलाब की पंखुड़ियों को मिक्स करके पीने से पेट की सेहत अच्छी बनी रहती है। इससे पेट की गर्मी, जलन भी कम होती है। नाश्ते के समय गुलकंद मिल्क पीना चाहिए।

हंसना मना है

एक कंजूस का बेटा अपनी गर्लफ्रेंड के साथ डेट पर गया, जब घर वापस आया, कंजूस के पापा- कितने रुपये खर्च किए ,बेटा: 500। कंजूस के पापा: 500 क्यों? बेटा: हां वो इतने ही लेकर आई थी।

चकलू घर से भाग गया, दौड़ता रहा घंटों दौड़ता रहा। कुछ घंटे दौड़ने के बाद जब थककर बैठा तो पता चला कि केवल फिल्मी हीरो ही दौड़ते हुए बड़े होते हैं।

एक लड़की के पढ़ते-पढ़ते सिर में दर्द हो गया लड़की दुकान पर गई। लड़की: भैया एक सिर दर्द की गोली देना: दुकानदार: ये लो मैडम 5 रुपये की है: लड़की भइया इसमें कोई और कलर वाली दिखाना। दुकानदार बेहोश।

पत्नी ने सुबह-सुबह पति को उठाया। पत्नी: सुनो जी, मैंने सपना देखा कि आप मेरे लिए हीरों का हार लेकर आए हैं। पति: तो फिर से एक बार सो जाओ और सपने में ही हार पहन भी लो।

अर्ज किया है.. जब देखा उन्होंने तिरछी नजर से, कसम खुदा की, मदहोश हो गए हम। पर जब पता चला नजर पर्मानेंट तिरछी है, वहीं खड़े-खड़े बेहोश हो गए हम।

हर फूली हुई रोटी कच्ची नहीं होती, हर आंसू बहाने वाली सच्ची नहीं होती, इन लड़कियों से बचकर रहना-ए-दोस्त, हर स्कूल जाने वाली लड़की बच्ची नहीं होती।

कहानी | दुनिया एक सराय है

एक राजा था जो बहुत घमंडी था। उसके घमंड के चलते आस-पास के राज्य के राजाओं से भी उसके संबंध अच्छे नहीं थे। उसके घमंड की वजह से सारे राज्य के लोग उसकी बुराई करते थे। एक बार उस गांव से एक साधु महात्मा गुजर रहे थे। उन्होंने भी राजा के बारे में सुना और राजा को सबक सिखाने की सोची। साधु तेजी से राजमहल की ओर गए और बिना प्रहरियों से पूछे सीधे अंदर चले गए। राजा ने देखा तो वह गुस्से में भर गया। राजा बोला, ये क्या उदण्डता है महात्मा जी, आप बिना किसी की आज्ञा के अंदर कैसे आ गए। साधु ने विनम्रता से उत्तर दिया, मैं आज रात इस सराय में रुकना चाहता हूं। राजा को ये बात बहुत बुरी लगी वह बोला, महात्मा जी ये मेरा राज महल है कोई सराय नहीं, कहीं और जाइये। साधु ने कहा हे राजा, तुमसे पहले ये राजमहल किसका था। राजा, मेरे पिताजी का। साधु, तुम्हारे पिताजी से पहले ये किसका था। राजा, मेरे दादाजी का। साधु ने मुस्करा कर कहा, हे राजा, जिस तरह लोग सराय में कुछ देर रहने के लिए आते है वैसे ही ये तुम्हारा राजमहल भी है जो कुछ समय के लिए तुम्हारे दादाजी का था। फिर कुछ समय के लिए तुम्हारे पिताजी का था, अब कुछ समय के लिए तुम्हारा है। कल किसी और का होगा। साधु की बातों से राजा इतना प्रभावित हुआ कि सारा राजपाट, मान सम्मान छोड़कर साधु के चरणों में गिर पड़ा और महात्मा जी से क्षमा मांगी और फिर कभी घमंड न करने की शपथ ली।

5 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

प्रेमी के साथ बिताये हुए पल याद करेंगे। जीवनसाथी की सेहत का ख्याल रखें। पति-पत्नी के बीच मनमुटाव हो सकता है। आज पार्टनर के साथ समय नहीं बिता पाएंगे।

वृषभ

आज का दिन आपको बहुत सारी खुशियां प्रदान करेगा। जो भी परेशानियां दोनों में चल रही थी, वो समाप्त होंगी। एक-दूसरे से हर बात को लेकर खुलकर चर्चा करेंगे।

मिथुन
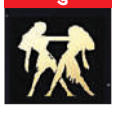
आज लव लाइफ को रोमांचक बनाने के लिए मन में नई योजनाएं आएंगी। साथी के साथ मिलकर फ्यूचर प्लानिंग करेंगे। सिंगल को अपनी उम्र से बड़ा कोई आकर्षित करेगा।

कर्क

आज का दिन अच्छा रहेगा। साथी के साथ चल रहा वाद-विवाद समाप्त होगा। पार्टनर को समय दें। सिंगल के प्रेम संबंधों में आ रही मुश्किलें कम होंगी, नए रास्ते खुलेंगे।

सिंह

आज का दिन अच्छा रहेगा। लव लाइफ के लिए भी समय अनुकूल है। साथी के साथ मिलकर कहीं घूमने की प्लानिंग करेंगे। विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। सिंगल की लाइफ में किसी की एंट्री हो सकती है।

कन्या

आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है। पार्टनर की सेहत का ख्याल रखें। आज पति-पत्नी के बीच तालमेल ठीक रहेगा। पार्टनर से आपको खुशखबरी मिल सकती है। आप पार्टनर से सुख मिल सकता है।

तुला

पत्नी के साथ मांगलिक प्रोग्राम में जाने के योग हैं। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। पार्टनर की कुछ बातें इग्नोर करनी पड़ेगी। आज आपके प्रेमी से मन मुटाव हो सकता है।

वृश्चिक

पार्टनर के साथ बाहर घूमने जा सकते हैं। प्रेम संबंधों में किसी भी तरह का कोई बड़ा फैसला ना लें। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पार्टनर को लेकर किसी के साथ विवाद हो सकता है।

धनु

सिंगल लोग किसी को प्रपोज करने की सोच रहे हैं तो थो?! रुके। दांपत्य जीवन मे तालमेल रहेगा। आप आपको मानसिक शाति मिलेगी। पार्टनर को लेकर मन में पॉजीटिव बातें चलेगी।

मकर

आज लव लाइफ को लेकर आपका तन और मन पूरा दिन ऊर्जा से भरे रहेंगे लेकिन रात को स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। छोटी-मोटी समस्या को नजरअन्दाज न करें।

कुम्भ

आप किसी को प्रपोज करना चाह रहे हैं तो कर सकते हैं। आपका प्रपोजल स्वीकार किया जा सकता है। पार्टनर से सुख मिलेगा। लव लाइफ के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा। पार्टनर के साथ घूमने जा सकते हैं।

मीन

चीजों और लोगों को तेजी से परखने की क्षमता आपकों दूसरों से आगे बनाए रखेगी। घर में पेड़-पौधे लगाने से मन का तनाव कम होगा। पारिवारिक जीवन खुशहाल रहेगा।

तनु वेड्स मनु-3

जीशान संग इश्क लड़ाएंगी कंगना

बॉलीवुड | मसाला

कंगना रनौत और आर माधवन स्टारर फिल्म तनु वेड्स मनु ब्लॉकबस्टर हिट रही है। इस फिल्म का दूसरा पार्ट भी खूब पसंद किया गया था लेकिन कहानी अभी खत्म नहीं हुई है। फैंस को फिल्म के तीसरे पार्ट का लगातार इंतजार था और अब खबर है कि फैंस जल्द ही तनु वेड्स मनु की तीसरी कड़ी लेकर आने वाले हैं। अब सवाल ये उठता है कि आखिर तीसरे पार्ट की कहानी क्या होगी? क्या इस बार भी स्टार कास्ट सेम रहेगी या फिर मेकर्स इस बार कोई बड़े बदलाव करने के इच्छुक हैं? एक रिपोर्ट के हवाले से बताया कि अगले पार्ट में कहानी कंगना रनौत और जीशान अयूब के इर्द-गिर्द हो सकती है। एक इंटरव्यू में जीशान ने कहा कि राइटर हिमांशु शर्मा चाहते हैं कि अगला पार्ट कंगना रनौत और जीशान के इर्द-गिर्द हो। हालांकि जीशान ने इसके साथ ही ये भी कहा कि अभी इन विचारों पर डिसकशन जारी है और ये फाइनल फैसला नहीं है। बता दें कि साल 2016 में रिलीज हुई फिल्म तनु वेड्स मनु रिटर्न्स रिलीज हुई थी और इसके लिए कंगना रनौत को बेस्ट एक्ट्रेस का नेशनल अवॉर्ड मिला था। वर्क फ्रंट की बात करें तो कंगना रनौत के पास प्रोजेक्ट्स की कोई कमी नहीं है। कंगना रनौत की अपकमिंग फिल्मों में धाकड़, तेजस और सीता जैसी फिल्में शुमार हैं। इसी बीच वह टीवी शो लॉकअप को भी होस्ट कर रही हैं। कंगना रनौत होस्टेड शो लॉकअप का प्रसारण बालाजी पर किया जा रहा है। दोनों ही जगहों पर मुफ्त में देखा जा सकता है। कंगना और आर. माधवन की जोड़ी अभी तक ब्लॉकबस्टर हिट रही है, लेकिन एक सवाल ये भी है कि क्या लोगों को जीशान के साथ उनकी जोड़ी पसंद आएगी?

बॉलीवुड | मन की बात

भारतीय छात्रों के साथ यूक्रेन में हो रहे रंगभेद : सोनम कपूर

यूक्रेन में रूस के हमले जारी हैं। इस बीच भारतीय छात्रों के जगह-जगह फंसने की खबरें आई। सभी बच्चों को निकालने के लिए भारत सरकार जुटी हुई है। कई छात्रों ने अपने वीडियोज शेयर किए जिसमें देखा जा सकता है कि उन्हें ट्रेन में चढ़ने से रोका गया। उन्हें स्थानीय ग्रॉसरी स्टोर पर नस्लभेद का सामना करना पड़ रहा है। भीषण लड़ाई और गोलाबारी के बीच सूमी शहर में 700 भारतीय छात्र फंसे हुए थे जिन्हें अब निकाल लिया गया है। अभिनेत्री सोनम कपूर ने एक न्यूज रिपोर्ट शेयर की जिसमें उन्होंने भारतीय बच्चों के साथ रंगभेद के मामले की आलोचना की। सोनम कपूर ने इंस्टाग्राम स्टोरी शेयर की है। उसमें लिखा है, 'भारत ने कहा यह चिंता की बात है कि रूस और यूक्रेन दोनों से बार-बार आग्रह करने के बावजूद, पूर्वी यूक्रेन के शहर सूमी में भारतीय छात्रों को निकालने के लिए सुरक्षित रास्ता नहीं निकल पाया है। सूमी में 700 से अधिक भारतीय छात्र अभी भी निकाले जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।' पीटीआई की इस न्यूज रिपोर्ट को शेयर करते हुए सोनम ने लिखा, 'दोनों साइड की लड़ाई में भारतीय रंगभेद का सामना कर रहे हैं। रंग के आधार पर जिस तरह से व्यवहार किया जा रहा है वह निंदनीय है। कम से कम खबरें तो यही बता रही हैं।' शादी के बाद सोनम कपूर लंदन शिफ्ट हो गई हैं। वह मुंबई आती-जाती रहती हैं। वह आखिरी बार नेटफ्लिक्स की फिल्म एके वर्सेस एके में कैमियो रोल में नजर आई थीं। फिल्म में अनुराग कश्यप और अनिल कपूर मुख्य भूमिक में थे। सोनम ने अनिल कपूर की बेटी का रोल किया था। उनकी आने वाली फिल्म ब्लाइंड है।

ओटीटी पर आएगी ऋषि कपूर की आखिरी फिल्म, शर्माजी नमकीन

ऋषि कपूर ने 30 अप्रैल 2020 के दिन इस दुनिया को अलविदा कह दिया था। ऋषि कपूर का जाना फैंस के लिए एक बड़ा धक्का था लेकिन अपने काम के जरिए वो हमेशा हमारे बीच जिंदा रहेंगे। ऋषि कपूर की आखिरी फिल्म का फैंस को बेसब्री से इंतजार था और अब इस फिल्म की रिलीज डेट जारी कर दी गई है। ऋषि कपूर की आखिरी फिल्म शर्माजी नमकीन 31 मार्च के दिन प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज की जाएगी। फरहान अख्तर ने इंस्टाग्राम पर फिल्म का पोस्टर रिलीज किया है जिसमें ऋषि कपूर का फर्स्ट लुक और फिल्म की रिलीज डेट समेत काफी सारी जानकारी दी गई है।

पोस्टर में ऋषि कपूर की वो सुकून देने वाली मुस्कान देखी जा सकती है और इस पोस्टर को शेयर करते हुए फरहान अख्तर ने लिखा- आ रहे हैं शर्माजी, हमारी लाइफ में लगाने तड़का। 31 मार्च को वर्ल्ड प्रीमियर। फरहान अख्तर की इस पोस्ट को कुछ ही देर में लाखों लाइक्स मिल गए। कमेंट सेक्शन में फैंस क्रेजी होते दिखाई पड़े। एक यूजर ने लिखा- हे भगवान, जैसे ऋषि जी फिर से जिंदा हो गए हों। एक अन्य फैन ने लिखा- ऋषि जी की आखिरी फिल्म। एक शख्स ने कमेंट किया- 100 प्रतिशत ब्लॉकबस्टर हिट। एक अन्य यूजर ने लिखा- प्लीज इसे थिएटर्स में रिलीज करो।

बॉलीवुड | मसाला

एक ही लाइन में क्यों चलती हैं चींटियां, जानिए इसके पीछे की वजह

धरती पर कई अनोखे जीव पाए जाते हैं जो अपने रहन सहन के लिए जाने जाते हैं। इन्हीं जीवों में चीटियां भी शामिल हैं। चीटियों में कई अनोखी चीजें देखने को मिलती हैं। चीटियों की एक आदत को देखकर हम सभी को हैरान होती है। आपने देखा होगा कि चीटियां हमेशा एक ही लाइन में चलती हुई नजर आती हैं। चीटियों की इस आदत के पीछे एक बड़ी वजह है। आइए जानते हैं कि आखिर चीटियां एक ही लाइन में क्यों चलती हैं? चीटियां दुनिया में हर जगह पाई जाती हैं। यह हमेशा एक परिवार बनाकर रहती हैं। धरती पर कई प्रजाति की चीटियां पाई जाती हैं। रानी चींटी, नर चींटी और मादा चीटियां हमेशा एक साथ और अपना परिवार बनाकर रहती हैं। नर चीटियों में पंख होता है जबकि मादा चीटी में पंख नहीं पाए जाते हैं। चीटियों को सामाजिक कहा जा सकता है, क्योंकि यह हमेशा झुंड में ही चलती हैं। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि चींटियों के पास आंखें सिर्फ दिखाने के लिए होती हैं। चीटियां देख नहीं सकती हैं, क्योंकि वो अंधी होती हैं। जब चीटियां खाने की खोज में बाहर आती हैं, तो उनमें सबसे आगे रानी चलती है। रानी चींटी रास्ते में एक रसायन छोड़ती है जिसका नाम फेरोमोन्स है। इसी की गंध को सूंघकर बाकी चींटियां भी पीछे-पीछे लाइन में चलती रहती हैं। इसकी वजह से एक लाइन बन जाती हैं। चींटियों में एक लाइन में चलने की यही वजह है। दुनिया में हर जगह चींटी पाई जाती हैं, लेकिन सिर्फ यह अंटार्कटिका में नहीं पाई जाती हैं। ब्राजील के अमेजन के जंगलों में सबसे खतरनाक चींटियां पाई जाती हैं। बताया जाता है कि वह बहुत तेज डंक मारती हैं। उनके डंक की चोट के बाद ऐसा महसूस होता है कि बंदूक की गोली शरीर में लग गई हो। सबसे अधिक समय तक जीने वाले जीवों में चींटियां शामिल हैं। दुनिया में कई ऐसे जीव पाए जाते हैं जो सिर्फ कुछ घंटे या कुछ दिन तक ही जीवित रहते हैं। चींटियों में एक खास प्रजाति की चींटी पाई जाती है जिसका नाम पोगोनॉमीमेक्स ऑही है जो 30 सालों तक जीवित रहती है।

अजब-गजब | ये है दुनिया का सबसे अद्भुत किला

इस किले को बनाने में लगा था 400 साल का वक्त, 600 साल से बरकरार है राज

हमारे देश में प्राचीन काल के तमाम किले और इमारतें मौजूद है। इनमें से कई इमारतों को उनके रहस्यों की वजह से जाना जाता है। हम आपको आज जिस किले के बारे में बताने जा रहे हैं वह भी तमाम रहस्यों से भरा हुआ है। ये किला है गोलकोंडा का किला। यह तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में स्थित है। इसे हैदराबाद के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में भी जाना जाता है। यह देश की सबसे बड़ी मानव निर्मित झीलों में से एक हुसैन सागर झील से लगभग नौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यह किला क्षेत्र के सबसे संरक्षित स्मारकों में से एक है। कहा जाता है कि इस किले का निर्माण कार्य 1600 के दशक में पूरा हुआ था, लेकिन इसे बनाने की शुरुआत 13वीं शताब्दी में काकतिया राजवंश ने की थी। इस किले को अपनी वास्तुकला, पौराणिक कथाओं, इतिहास और रहस्यों के लिए आज भी जाना जाता है। इस किले के निर्माण से एक रोचक इतिहास जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि एक दिन एक चरवाहे लड़के को पहाड़ी पर एक मूर्ति मिली। जब उस मूर्ति की सूचना तत्कालीन शासक काकतिया राजा को मिली तो उन्होंने उसे पवित्र स्थान मानकर उसके चारों ओर मिट्टी का एक किला बनवा दिया, जिसे आज गोलकोंडा किला के नाम से जाना जाता है। ये किला 400 फीट ऊंची पहाड़ी पर बना है। इस किले में आठ दरवाजे और 87 गढ़ हैं। इस किले के मुख्य दरवाजे का नाम फतेह दरवाजा है। जो 13 फीट चौड़ा और 25 फीट लंबा है। इस दरवाजे को स्टील स्पाइक्स के साथ बनाया गया है जो इसे हाथियों के हमले से सुरक्षित रखते थे। इस किले की शानदार भव्यता का अंदाजा आप यहां का दरबार हॉल देख कर ही लगा सकते हैं, जो हैदराबाद और सिकंदराबाद के दोनों शहरों को ध्यान में रखते हुए पहाड़ी की चोटी पर बनाया गया है। यहां पहुंचने के लिए एक हजार सीढियां चढ़नी पड़ती हैं। इस किले को इस तरह से बनाया गाय है कि जब कोई किले के तल पर ताली बजाता है तो उसकी आवाज बाला हिस्सा गेट से गूंजते हुए पूरे किले में सुनाई देती है। इस जगह को तालिया मंडप या आधुनिक ध्वनि अलार्म भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि किले में एक रहस्यमय सुरंग भी है, जो किले के सबसे निचले भाग से होकर किले के बाहर निकलती है। ऐसा कहा जाता है कि इस सुरंग को आपातकालीन स्थिति में शाही परिवार के लोगों को सुरक्षित बाहर पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। हालांकि वर्तमान में ये सुरंग समाप्त हो गई है।

इटावा में भीषण सड़क हादसा, छह की मौत, पांच घायल

» मिनी ट्रक की टक्कर से कार के उड़े परखच्चे, घायलों को कराया गया भर्ती

» मुख्यमंत्री ने जताया शोक घायलों के समुचित इलाज के दिये निर्देश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इटावा। इटावा-मैनपुरी हाईवे पर नगला राठौर गांव के पास बुधवार को मिनी ट्रक की टक्कर से एक कार के परखच्चे उड़ गए। टायर फटने से कार अनियंत्रित होकर दूसरी लेन पर पहुंच गई थी। हादसे में कार सवार 10 में से छह लोगों ने दम तोड़ दिया। ट्रक चालक समेत पांच लोग घायल हैं। मरने वाले सभी जसवंत नगर क्षेत्र के रहने वाले और राधिका स्टूडियो टीम के सदस्य थे। ये मैनपुरी में एक शादी समारोह में फोटो व वीडियोग्राफी के लिए जा रहे थे।

फोटोग्राफरों की टीम अर्टिगा कार से मैनपुरी के लिए निकली थी। कार जसवंत नगर होते हुए इटावा-मैनपुरी रोड पर पहुंची। यहां से कुछ दूर मैनपुरी की ओर चलने के बाद सैफई थाना क्षेत्र के नगला

राठौर के करीब कार का टायर फट गया। इससे कार अनियंत्रित होकर रोड के दूसरी तरफ पहुंच गई। उसी दौरान सैफई से इटावा की ओर आ रहे मिनी ट्रक ने कार को टक्कर मार दी।

मिनी ट्रक की टक्कर से कार के परखच्चे उड़ गए। मदद के लिए चीख-पुकार मच गई। पुलिस ने सभी को मेडिकल यूनिवर्सिटी पहुंचाया। वहां डॉक्टरों ने छह लोगों को मृत घोषित कर दिया। पांच घायलों का इलाज हो रहा है। घायलों में मिनी ट्रक चालक भी शामिल हैं। मिनी ट्रक चालक एटा के रिजौर निवासी चरण सिंह (48)ने बताया कि वह अजमेर से मशीनों के पार्ट्स लेकर बिहार और उड़ीसा जा रहा था। जसवंत नगर के गांव धरबसार निवासी मंजीत (27) पुत्र शिव प्रसाद, गांव कटरा कूपचंद्र निवासी शादाब(23) पुत्र गुलजार, गांव मोहन की मड़ैया निवासी बृजमोहन (23) पुत्र महेश चंद्र, गुलाब बाड़ी निवासी विशेष (25) पुत्र मुनीम, महिला टोला निवासी करण (23) पुत्र सुबोध कुमार, जैन मोहल्ला निवासी विपिन कुमार (30) पुत्र अमर सिंह की मौत हो गयी। वहीं घायलों में जसवंत नगर लुधपुरा निवासी रमन (30) व अमन कुमार (18), गुलाब बाड़ी निवासी रॉकी (25), सुंदरपुर इटावा निवासी विशाल राठौर (30) पुत्र बलबीर सिंह, एटा रिजौर निवासी चरण सिंह (48) पुत्र नाथूराम (मिनी ट्रक चालक) शामिल हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इटावा हादसे में मारे गए लोगों के प्रति शोक व्यक्त किया है और दुर्घटना में घायल व्यक्तियों के समुचित उपचार करवाने के निर्देश दिए हैं।

दिव्यांग समेत तीन पर चाकू से हमला, गिरफ्तार

» भाजपा का झंडा लगाने को लेकर हुआ था विवाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सुलतानपुर। मकान पर भाजपा का झंडा लगाने पर कुछ युवकों ने दिव्यांग को चाकू मारकर घायल कर दिया। बीच बचाव करने पहुंचे दो चचेरे भाइयों पर भी हमला किया। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना धम्मौर क्षेत्र के जयलाल का पुरवा, नरही गांव की है। मामला दो अलग-अलग समुदायों के बीच का है, इस कारण तनातनी की स्थिति है।

एक पैर से दिव्यांग दिनेश कुमार का आरोप है कि पड़ोसी गांव के निवासी रजा व रिजवान उसकी दिव्यांगता का मजाक उड़ाते हैं। मंगलवार की रात करीब नौ बजे वह घर की तरफ लौट रहे थे। रास्ते में रोककर दोनों ने कमेंट शुरू कर दिया गया, इसको लेकर कहासुनी हुई। इसके बाद दिनेश घर चले गए। इनका कहना है कि कुछ देर बाद आरोपी घर पर आ धमके और भाजपा का झंडा देखकर ऐतराज जताने लगे। विरोध करने पर दोनों ने दिनेश पर चाकू से हमला कर दिया। जानकारी मिली तो चचेरे भाई राजपाल व रामपाल मौके पर पहुंच गए और बीच-बचाव करने लगे। हमलावरों ने इन पर भी चाकू से हमला कर दिया। मामले की सूचना डायल 112 व थाना प्रभारी को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया। पुलिस मामले को छिपाते हुए मामूली मारपीट का मामला बताती रही। थाना प्रभारी सुनील पांडेय का कहना है कि दिनेश को दिव्यांग कहकर चिढ़ाया जाता था साथ ही झंडा लगाने को लेकर विवाद की बात भी पता चली है। हालांकि, इस बारे में छानबीन की जा रही है। आरोपियों को हिरासत में ले लिया गया है। गांव में शांति व्यवस्था कायम है।

सीतापुर : सुभासपा प्रत्याशी की सुरक्षा में तैनात गनर की डूबकर मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सीतापुर। मछरेहटा (सीतापुर) विधान सभा मिश्रिख के सुभासपा प्रत्याशी की सुरक्षा में लगे गनर (सिपाही) की तीर्थ में डूबकर मौत हो गई। सिपाही बागपत जिले का निवासी था। मछरेहटा क्षेत्र के गांव कुंदौली में एक मंदिर के सामने तीर्थ है। विधान सभा मिश्रिख से सुभासपा प्रत्याशी मनोज राजवंशी की सुरक्षा में लगा 2020 बैच का सिपाही गुराना रोड बडौत जिला बागपत निवासी रवि ढाका (28)पुत्र यशपाल अपने साथी वेद प्रकाश के साथ स्नान करने गया था। दोनों तीर्थ के पश्चिम में स्नान कर रहे थे। अचानक रवि तीर्थ के बीच पहुंच गया। तीर्थ की गहराई अधिक होने से रवि डूब गया। दूसरा साथी पहले ही स्नान करके चला गया था। बच्चों ने इसकी ग्रामीणों को सूचना दी। सिपाही का शव बरामद कर लिया गया है।

आगरा में व्यापारी की पत्नी-बेटी की हत्या

पांच बदमाशों ने दिया वारदात को अंजाम, लूटपाट, पुलिस ने जांच के लिए लगायी चार टीमें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

आगरा। जिले के बाह कस्बे में बदमाशों ने सनसनीखेज वारदात को अंजाम दिया है। बुधवार देर रात बाह के गली कल्याण सागर निवासी व्यापारी उमेश पैंगोरिया के घर में घुसे बदमाशों ने उनकी पत्नी और बेटी की हत्या कर दी गई। इसके बाद घर में रखा सामान लूट ले गए। दोहरे हत्याकांड से इलाके में सनसनी फैल गई। एसएसपी मौके पर पहुंचे। जांच के लिए पुलिस की चार टीमें लगाई गई हैं।

उमेश पैंगोरिया फुटवियर विक्रेता हैं। कस्बे में उनका दो मंजिला मकान है। बुधवार रात को उमेश पैंगोरिया नीचे वाले कमरे में सोए थे। उनकी पत्नी कुसमा देवी, बेटी सविता गुप्ता, सविता का बेटा अनुज पहली मंजिल पर बने कमरे में सोए थे।

देर रात छत से बदमाश उनके घर में घुस गए। बदमाशों ने कुसमा देवी और सविता की हत्या कर दी। इसके बाद कमरा में रखा काफी सामान लूट ले गए। बदमाशों के जाने के बाद अनुज ने नीचे आकर अपने नाना को घटना की सूचना दी। जब वह ऊपर पहुंचे कुसमा और सविता मृत मिलीं। कमरे में सामान बिखरा हुआ था। सूचना मिलते ही थाना पुलिस पहुंच गई। वारदात के चश्मदीद अनुज ने बताया कि घर में पांच बदमाश घुसे थे। अनुज ने किसी तरह छिपकर अपनी जान बचाई। डकैती और दोहरे हत्याकांड से कस्बे में सनसनी फैल गई। तमाम लोग व्यापारी के घर पर जुट गए। घटना के संबंध में एसएसपी सुधीर कुमार सिंह ने बताया कि प्रथम दृष्टया मुंह दबाकर मां-बेटी की हत्या की गई है। डॉग स्क्वायड और फॉरेसिंक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं।

घटना का खुलासा करने के लिए चार टीमें बनाई गई हैं। उधर, जानकारी मिली है कि व्यापारी ने छह महीने पहले जरार में 27 लाख रुपये में अपना प्लॉट बेचा था। उनकी बेटी तलाकशुदा है। वह अपनी बेटे के साथ यहीं रहती थी।

सपा जीतेगी या भाजपा, शर्त पर लगा दिया चार बीघा खेत

पंचायत में ग्रामीणों के बीच लिखा गया करारनामा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बदायूं। विधान सभा चुनाव में किसकी सरकार बनेगी इसको लेकर ककराला इलाके में बड़ा दिलचस्प मामला सामने आया है। जहां दो किसानों में पंचायत के दौरान सपा और भाजपा सरकार बनने पर बहस हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि उन्होंने अपना-अपना चार बीघे खेत शर्त पर लगा दिया। एक के मुताबिक सरकार बनेगी तो वह दूसरे व्यक्ति के चार बीघा खेत में एक साल तक फसल करेगा। बाकायदा इसका पत्र भी वायरल हो रहा है।

मामला शेखूपुर विधान सभा क्षेत्र के गांव विरियाडांडी का है। छह मार्च को गांव के लोग चौपाल पर बैठे थे। उनके बीच किसकी सरकार बनेगी, इस पर तगड़ी बहस चल रही थी। कोई कह रहा था कि इस बार सपा सरकार बनेगी तो कोई भाजपा सरकार बनने पर जोर दे रहा था। इसी दौरान चौपाल पर मौजूद शेर अली ने कहा कि इस बार सपा सरकार बनेगी। उनकी बात काटते हुए विजय सिंह ने कहा कि चाहे कोई शर्त लगा

ले भाजपा सरकार ही बनेगी। इसी दौरान दोनों के बीच चार-चार बीघा खेत की शर्त लग गई। दोनों पक्षों ने कहा कि अगर उनके मुताबिक सरकार बनी तो वह दूसरे के चार बीघा खेत में एक साल तक अपनी फसल करेंगे। फसल से शर्त हारने वाले का कोई लेना-देना नहीं होगा। चूंकि पंचायत में तमाम और ग्रामीण मौजूद थे इसलिए लोगों ने मौखिक शर्त लगाना मंजूर नहीं किया। एक व्यक्ति कागज और पेन ले आया। दोनों के बीच लिखित में शर्त लिखी गई। उस कागज पर गांव के तमाम लोगों ने हस्ताक्षर किए और किसी ने अंगूठा भी लगाया। अब ये शर्त लिखा पत्र जिले भर में वायरल हो रहा है। विरिया डांडी गांव निवासी शेर अली अलबसी एग्रो एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी के डायरेक्टर हैं और किसान मजदूर संघ के जिलाध्यक्ष हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि ये शर्त लगी है। उस दिन वह चार लोगों के बीच बैठे थे। बात छिड़ी तो शर्त लग गई। वैसे वह और विजय सिंह एक ही गांव के लोग हैं। आपस में भाई जैसे संबंध हैं।

शर्त नहीं वादा था न टूटे इसलिए कागज पर लिखा गया

विरियाडांडी गांव के विजय सिंह ने बताया कि हम लोग छह मार्च को गांव की चौपाल पर बैठे। तभी सरकार बनने की बहस हुई थी। हमने वादा किया था कि अगर सपा सरकार बनेगी तो शेर अली हमारे चार बीघा खेत में फसल करेंगे। अगर भाजपा सरकार बनी तो हम शेर अली के खेत में फसल करेंगे। ये वादा न टूटे इसलिए लिखित में शर्त हुई। हमें विश्वास है कि भाजपा सरकार ही बनेगी।

बनारस में ईवीएम बाहर ले जाने पर एडीएम सस्पेंड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा उम्मीदवारों और कार्यकर्ताओं ने वाराणसी सहित कई अन्य जगह इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की हैंडलिंग को लेकर हंगामा किया। भारत निर्वाचन आयोग ने वाराणसी में मूवमेंट प्लान जारी किए बिना मतगणना स्थल के गोदाम से इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) निकाले जाने के मामले में प्रभारी अधिकारी ईवीएम व एडीएम सिविल सप्लाई नलिनी सिंह को सस्पेंड कर दिया है।

वाराणसी के जिलाधिकारी कौशल राज शर्मा ने बताया कि अभी आदेश की कापी नहीं मिली है। हालांकि, सुबह ही प्रभारी अधिकारी को निर्वाचन सभी कार्यों से मुक्त कर दिया गया है। उधर, एडीजी की गाड़ी में तोड़फोड़ और हंगामे में 300 अज्ञात के खिलाफ 16 संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ है। गौरतलब है कि मंगलवार को वाराणसी में मतगणना स्थल के गोदाम से प्रशिक्षण के लिए ईवीएम एक गाड़ी में रखकर यूपी कालेज भेजी जा रही थीं। इस बीच पहड़िया मंडी परिसर के स्ट्रांग रूम में रखीं। सपा कार्यकर्ताओं ने दौड़ाकर वाहन को रोक लिया और धांधली का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। एडीजी की गाड़ी पर पथराव भी किया।

लखनऊ में धारा 144 10 अप्रैल तक बढ़ी

लखनऊ। विधान सभा चुनाव की मतगणना और होली को देखते हुए कमिश्नरेट इलाके में धारा 144 को 10 अप्रैल तक बढ़ा दिया गया है। यह आदेश बुधवार को संयुक्त पुलिस आयुक्त कानून-व्यवस्था पीयूष मोर्डिया ने जारी किया। इस दौरान विजयी प्रत्याशियों को जुलूस निकालने की अनुमति नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि पांच से अधिक व्यक्ति बिना अनुमति के एक जगह एकत्र नहीं हो सकेंगे। किसी भी कार्यक्रम के लिए पूर्व अनुमति लेनी होगी। रात 10 से सुबह छह बजे तक लाउडस्पीकर का इस्तेमाल नहीं होगा। उन्होंने बताया कि विजय जुलूस निकालने वालों के खिलाफ कार्रवाई होगी। साथ ही सोशल मीडिया पर भ्रामक प्रचार कर माहौल बिगाड़ने का प्रयास करने वालों पर नजर रहेगी।

जयंत चौधरी और राकेश टिकैत के इलाके में फायदे में गठबंधन!

» नोएडा में बीजेपी उम्मीदवार पंकज सिंह आगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव के लिए मतगणना जारी है। रुझानों में बीजेपी को स्पष्ट बहुमत मिल गया है। इन सबके बीच सबसे ज्यादा नजरें पश्चिमी यूपी की ओर टिकी हुई हैं, जहां पर लगभग साल भर तक चले किसान आंदोलन का काफी असर देखा गया था। भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता राकेश टिकैत ने लंबे समय तक दिल्ली की सीमा पर आंदोलन करते हुए कृषि कानूनों को रद्द करवा दिया था।

किसान आंदोलन के दौरान यूपी से जिन दो लोगों की सबसे ज्यादा चर्चा हुई थी, उसमें राकेश टिकैत और आरएलडी अध्यक्ष जयंत चौधरी शामिल हैं। ऐसे में अब जो चुनावी नतीजे आ रहे हैं उसमें गठबंधन फायदे में दिख रही है। जयंत चौधरी का क्षेत्र बड़ौत है, जहां से सपा गठबंधन को बढ़त हासिल है। बड़ौत सीट से आरएलडी के जयवीर और बीजेपी के कृष्ण पाल मलिक उम्मीदवार हैं। इस सीट से जयवीर आगे चल रहे हैं। चुनाव आयोग द्वारा सुबह पौने बारह बजे तक मुहैया करवाए गए आंकड़ों के अनुसार आरएलडी को 48.95 फीसदी वोट मिला है, जबकि बीजेपी उम्मीदवार को 43.11 फीसदी वोट हासिल हुए हैं. बसपा उम्मीदवार अंकित तीसरे नंबर पर हैं। उधर, राकेश टिकैत का मुजफ्फरनगर में बुढ़ाना विधानसभा सीट से आरएलडी को बढ़त हासिल है। आरएलडी के राजपाल सिंह बालियान आगे चल रहे हैं, जबकि दूसरे नंबर पर बीजेपी उम्मीदवार उमेश मलिक हैं। जिन्हें दोपहर 12 बजे तक 45.29 फीसदी वोट मिले हैं। इस सीट से भी तीसरे नंबर पर बसपा के उम्मीदवार अनीस हैं। बता दें कि पिछली बार पश्चिमी यूपी में बीजेपी को बंपर सीटें हासिल हुई थीं। कैराना से सपा गठबंधन के नाहिद हसन आगे चल रहे हैं, जबकि नोएडा से बीजेपी उम्मीदवार पंकज सिंह आगे हैं। रुझानों के अनुसार मुजफ्फरनगर से कपिल अग्रवाल व थाना भवन सीट से गन्ना मंत्री सुरेश राणा पीछे चल रहे हैं। नोएडा में राजनाथ सिंह के बेटे पंकज सिंह आगे चल रहे हैं।

छाता सीट पर गठबंधन प्रत्याशी तेजपाल सिंह आगे

छाता विधानसभा में सपा रालोद गठबंधन प्रत्याशी तेजपाल सिंह भाजपा प्रत्याशी से 374 मतों से आगे चल रहे हैं। तेजपाल सिंह को 3127 लक्ष्मी नारायण चौधरी को 2753 मत मिले हैं। वहीं बसपा प्रत्याशी सोनपाल को 716 मत हासिल हुए हैं यहां कुल मत 6974 की गिनती हो चुकी है।

कांग्रेस के गढ़ में भाजपा की अदिति सिंह आगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव की मतगणना जारी है। सभी नतीजों का इंतजार है। गोरखपुर, करहल और जसवंतनगर के बाद सबसे चर्चित सीट रायबरेली सदर पर सभी की निगाहें टिकी हैं। अब तक रायबरेली सीट कांग्रेस के पास थी। हालांकि यहां कांग्रेस की टिकट से विधायक अदिति सिंह पार्टी के खिलाफ लगातार बगावत करती रही हैं। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुईं अदिति सिंह इस बार भाजपा की टिकट से चुनाव लड़ रही हैं।

अदिति सिंह पहले अपने बयानों और पार्टी के खिलाफ बगावत के चलते काफी सुर्खियां बटोरी चुकी हैं। अदिति सिंह का इस सीट से सपा के आरपी सिंह और कांग्रेस के मनीष सिंह से सीधा मुकाबला है। चुनाव आयोग के रिजल्ट के मुताबिक अदिति सिंह करीब दो हजार वोटों से आगे चल रही है। बता दें कि 180 रायबरेली सीट पर चौथे चरण में वोटिंग हुई थी। जनता ने भी बढ़चढ़कर वोटिंग की थी। रायबरेली विधानसभा सीट पर फिलहाल कांग्रेस पार्टी का कब्जा है। वहीं इस सीट पर इस साल बीजेपी, बीएसपी भी कांग्रेस के खिलाफ अपनी दावेदारी कर रहे हैं। अतीत पर गौर करें तो इस सीट पर सबसे अधिक बार कांग्रेस विजयी रही है। वहीं भारतीय जनता पार्टी को यहां से खाता तक नहीं खुल सका है। फिलहाल यहां से कांग्रेस पार्टी से अदिति सिंह विधायक हैं। हालांकि कुछ दिन पहले अदिति सिंह ने कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देकर भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर लिया था।

आम आदमी पार्टी बनी पंजाब की 'सरदार'

» केजरीवाल मॉडल पर पंजाब की जनता ने लगाई मुहर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पंजाब विधानसभा चुनावों के नतीजों के शुरुआती रुझानों से साफ है कि आम आदमी पार्टी स्पष्ट बहुमत के साथ राज्य में सरकार बनाने जा रही है। पार्टी का चुनावी एजेंडा बेरोजगारी, नशे के कारोबार पर रोक, भ्रष्टाचार मुक्त सरकार जैसे वादों पर केंद्रित था। पार्टी ने दिल्ली के अपने मॉडल को दिखाकर भी मतदाताओं का भरोसा जीतने की कोशिश की।

पंजाब में परंपरागत रूप से कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल का ही दबदबा रहा है। इस बार हालात अलग थे। कांग्रेस, आप, शिरोमणि अकाली दल-बसपा गठबंधन और भाजपा-पंजाब लोक कांग्रेस गठबंधनों ने ज्यादातर सीटों पर मुकाबलों को बहुकोणीय बना दिया। चुनाव से ठीक एक महीने पहले आप ने संगरूर के सांसद भगवंत सिंह मान को मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित कर दिया। यह भी आप के पक्ष में गया। राज्य के मालवा प्रांत में मान एक लोकप्रिय सिख चेहरा है।

पंजाब में आप के उभरने के मुख्य कारण

सत्ता विरोधी मत

कांग्रेस की चन्नी सरकार के खिलाफ जबरदस्त माहौल था। इससे सत्ता-विरोधी मत एकजुट हो गए। पंजाब में कांग्रेस न रोजगार के साधन दे पाई और न ही नशाखोरी से मुक्ति दिला सकी। भ्रष्टाचार भी जस का तस मुद्दा बना रहा। बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या रही है।

दिल्ली मॉडल

आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली मॉडल दिखाकर पंजाब के मतदाताओं का ध्यान खींचा। 2014 लोकसभा चुनावों में पार्टी ने तीन सीट जीतकर अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी थी।

आप का चुनावी एजेंडा

आप के 10 सूत्री चुनाव एजेंडा में बेरोजगारी, नशाखोरी, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दे प्रमुख थे। आप ने चुनावी घोषणा पत्र में सरकारी स्कूलों और अस्पतालों की स्थिति में सुधार का वादा किया था। किसानों की समस्याओं को हल करने का वादा भी आप के पक्ष में रहा।

कांग्रेस की कलह

कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व में तनातनी थमी नहीं। इससे उसके वोट शेयर पर नेगेटिव असर पड़ा। पिछले साल सितंबर में अमरिंदर सिंह से इस्तीफा ले लिया गया था। इससे सिख आबादी कुछ हद तक कांग्रेस से नाराज भी थी। पंजाब कांग्रेस के प्रमुख नवजोत सिंह सिद्धू, मौजूदा मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के बीच अनबन की खबरों से पार्टी को नुकसान हुआ।

किसानों का विरोध

केंद्र की भाजपा सरकार 2020 में तीन कृषि कानून लेकर आई तो पंजाब के किसान उन्हें रद्द करने के लिए आंदोलन करने में सबसे आगे थे। इस मुद्दे पर केजरीवाल पूरी तरह किसानों के साथ खड़े दिखाई दिए। इसका भी फायदा आप को मिला।

फोटो: सुमित कुमार

जश्न विधानसभा चुनाव में हुए सातों चरणों के मतदान की मतगणना जारी है। चुनाव परिणाम के रुझान भाजपा के पक्ष में है तो वहीं सपा दूसरे नंबर की पार्टी बनती दिख रही। वहीं भाजपा कार्यालय में रूझानों को देखकर कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर मिठाइयां बांटी। वहीं विधानसभा के समक्ष बुल्डोजर लेकर कार्यकर्ता भी जश्न मना रहे हैं।

बुंदेलखंड की 19 में 17 सीटों पर भाजपा को बढ़त, 2 पर सपा आगे

» योगी के मंत्री औलख पीछे, बांदा में सदर सीट से प्रकाश द्विवेदी आगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बुंदेलखंड की 19 में 17 सीटों पर भारतीय जनता पार्टी ने बढ़त बनाई हुई है। जबकि दो सीट पर सपा आगे है। झांसी की सदर, गरौठा, बबीना सीट पर भाजपा के प्रत्याशी आगे चल रहे हैं। जबकि, मऊरानीपुर सीट पर अपना दल एस की प्रत्याशी बढ़त बनाए हुए हैं। ललितपुर की सदर और महरौनी सीट पर भी भाजपा आगे चल रही है। जबकि जालौन जनपद की सदर सीट से भाजपा, कालपी से सपा और माधौगढ़ से भाजपा के प्रत्याशी आगे चल रहे हैं।

महोबा जिले में सदर सीट से भाजपा प्रत्याशी राकेश गोस्वामी 10300 वोटों से आगे चल रहे हैं। चरखारी सीट से भाजपा के बृजभूषण राजपूत 4600 वोटों से बढ़त बनाए हैं। बांदा में सदर सीट से प्रकाश द्विवेदी 8600, नरैनी से सपा के किरण वर्मा 200 वोटों, बबेरू से भाजपा के अजय पटेल 3000 मत, तिंदवारी से भाजपा के राकेश निषाद 16000 वोटों से बढ़त कायम किए हैं। जबकि, हमीरपुर जिले की सदर से भाजपा के मनोज प्रजापति 2900 वोटों, राठ से बीजेपी की मनीषा अनुरागी 6965 मत से बढ़त बनाए हुए हैं।

कांग्रेस से आराधना मिश्रा आगे

हाथरस की सादाबाद विधानसभा सीट पर भाजपा आगे। भाजपा के रामवीर उपाध्याय 1485 वोट से आगे चल रहे हैं। दूसरे स्थान पर रालोद के प्रदीप चौधरी उर्फ गुड्डू हैं। कुंडा से रघुराज प्रताप सिंह राजा भैया अपने निकटतम प्रत्याशी गुलशन यादव से आगे चल रहे हैं। पट्टी विधानसभा से कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह सपा प्रत्याशी राम सिंह से पीछे चल रहे हैं। बाबागंज सुरक्षित सीट से जनसत्ता दल के प्रत्याशी विनोद सरोज, भाजपा प्रत्याशी से आगे चल रहे हैं। रामपुर खास सीट से कांग्रेस प्रत्याशी आराधना मिश्रा मोना निकटतम प्रत्याशी भाजपा के नागेश प्रताप सिंह से आगे चल रही हैं।

काउंटिंग सेंटर पर बसपा कार्यकर्ता को हार्ट अटैक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। वोटों की गिनती के दौरान एक कार्यकर्ता को हार्ट अटैक आया है। बसपा कार्यकर्ता अंकित यादव को हार्ट अटैक आया है। यह हादसा गाजियाबाद शहर विधानसभा सीट के मतगणना केंद्र पर हुआ है। गाजियाबाद शहर विधानसभा सीट से बीजेपी ने अतुल गर्ग, कांग्रेस ने सुशांत गोयल, बीएसपी ने कृष्ण कुमार और समाजवादी पार्टी ने विशाल वर्मा को मैदान में उतारा है।

2017 में इस सीट से बीजेपी के अतुल गर्ग ने जीत दर्ज की थी। इस विधानसभा चुनाव में गाजियाबाद जिले में 54.92 फीसदी मतदान हुआ था। सबसे ज्यादा वोटिंग मोदीनगर में हुई तो सबसे कम वोटिंग साहिबाबाद में देखने को मिली थी। गजियाबाद में 51.57 फीसदी, लोनी में 61.49 फीसदी, मोदी नगर में 67.26 प्रतिशत, मुरादनगर में 59.72, साहिबाबाद में 47.03 फीसदी वोटिंग हुई थी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।